ISSN: 2395-7852

# International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management

Volume 10, Issue 3, May 2023

INTERNATIONAL
STANDARD
SERIAL
NUMBER
INDIA

Impact Factor: 6.551

+91 9940572462 +91 9940572462 ijarasem@gmail.com www.ijarasem.com

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 6.551 |Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal|

| Volume 10, Issue 3, May 2023 |

# हिन्दी साहित्य में नारी विमर्श तथा इसकी महत्ता

डॉ0 अशोक कुमार शर्मा
सह आचार्य, हिन्दी
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,
गंगापुर सिटी

**प्रस्तावना -**

हिन्दी कथा साहित्य में स्त्री चर्चा जिसमें नारी जीवन की अनेकता शामिल है अनपेक्षित दृश्य देखना है। हिन्दी साहित्य में छायावाद काल से स्त्री-विमर्श का जन्म माना जाता है। महादेवी वर्मा की श्रृंखला की कड़िया नारी परंपरा का सुंदर उदाहरण है।

प्रेमचंद से लेकर आज तक कई पुरूष लेखकों ने स्त्री समस्या को अपना विषय बनाया लेकिन उस रूप में नहीं लिखा जिस रूप में स्वयं महिला लेखिका ने लिखा है। मूलतः - स्त्री विमर्श की शुरुआत गुंज पश्चिम में देखने को मिला। सन् 1960 ई. के आस - पास के नारी संप्रदाय जोर पकड़ी जिसमें चार नाम अंकित हैं। उषा प्रियम्वदा, कृष्णा सोबती, मॅबॅल भंडारी एवं शिवानी आदि लेखिका ने नारी मन की अन्तद्रवन्द्वों एवं आपकी दोस्ती की कहानियाँ उकरेना में शुरू हुईं और आज स्त्री-विमर्श एक दिव्य वस्तु है।

एक दशक तक आओ - आओ इसी विषय पर एक दस्तावेज का रूप ले लिया जो आरंभिक स्त्री - चर्चा से सबसे शक्तिशाली सिद्ध हुआ। आज मैत्रेयी पुष्परा तक - अटे महिला लेखिका की बाढ़ सी आ गई जो पितृसत्ता समाज को झकझोर दिया। नारी मुक्ति की गुंज अब देह मुक्ति के रूप में स्थापित हुई।

सामाजिक मान्यताओं से लेकर बुद्धिजीवियों और दार्शनिकों के बीच लंबे समय से यह लगातार चर्चा और चिंता का विषय बना हुआ है कि हिंदी में स्त्री प्रश्न मूल लेख आज भी काफी कम मात्रा में मौजूद है। स्त्री शास्त्र जगत में स्त्री विमर्श की विविधता या एकांगीपन के संदर्भ में पहला प्रश्न यह है कि हिंदी साहित्य जगत में स्त्री विमर्श के मायने क्या हैं? साहित्य, जिसमें कथा, कहानी, समालोचना, कविता आदि मानवीय संवेदनाओं के वाहक विधा के रूप में देखा जाता है, वह दलित, स्त्री, अल्पसंख्यक और अन्य हाशिए के विमर्शों को किस रूप में चित्रित करता है? साहित्य अपने यथार्थवादी होने के दावे के बावजूद क्या स्त्री विमर्श की मूल विचारधारा को लेकर उस पर आम जन के बीच किसी शिष्य की संवेदना विकसित कर सफल हो पाई है?

स्त्री के प्रश्न हाशिए के नहीं बल्कि जीवन के केंद्र के प्रश्न हैं। साहित्यिक हिंदी साहित्य स्त्री संग्रहालय जिसे विक्टोमाशाली पुरुष लेखन में भी कहा जा सकता है, में पुरालेख या स्त्री विद्वान की निरंतरता बनी हुई है। इसका अर्थ यह नहीं है कि स्त्री या स्त्री प्रश्न पत्र से गायब है बल्कि यह है कि स्त्री की उपस्थिति या तो यौन वस्तु (यौन वस्तु) के रूप में है या यदि वह संघर्ष भी कर रही है तो उसका संघर्ष बहुत हद तक पितृसत्तात्मक मनोसंरचना अख्तियार होता है संघर्ष करने वाली स्त्री की निर्मिति ही पितृसत्तात्मक होती है। साहित्य की पितृसत्तात्मक परंपरा में कॉन्स्टेंट स्त्री आदर्श का क्या होता है दिख रहा है? क्या महिला विमर्श को देह विमर्श विमर्श के समकक्ष स्त्रियाँ - विमर्श विमर्श के दायित्वों का निर्वाह किया जा सकता है? यदि साहित्य का कोई सामाजिक दायित्व है तो हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श के नाम पर स्त्री देह को चुनौती और स्त्री को यौन संबंध या बाजार के उत्पाद के रूप में दर्शाया जा सकता है, जो कि पुरातनपंथी पितृसत्तात्मक बाजारवादी रणनीति पर काम कर रही है उस धारणा से यह मुक्त क्यों नहीं है? उसे पहचानना उसके सक्रिय प्रतिरोध से ही वास्तविक स्त्री विमर्श संभव है। सत्तार के दशक में नव सामाजिक आंदोलन के रूप में समतामूलक समाज निर्माण के सपने को लेकर क्यों उभरे नारीवादी प्रतिनिधियों की अपनी और उनकी विचारधारा को शामिल करने की - राष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्रीय स्तर की राजनीति करने का प्रयास किया जा रहा है?

साहित्य में महिला लेखन के रूप में विभिन्न कहानियाँ, दस्तावेज़ और आत्मकथाएँ उपलब्ध हैं जिनमें स्त्री की दैहिक पीड़ा से लेकर उसके वर्गीय, जातीय और लैंगिक पीड़ा का वास्तविक स्वरूप आयाम क्यों नहीं हो रहा है? स्त्री साहित्य के संकलन के आकलन के संदर्भ में भी हिंदी आलोचना में गैर-साहित्यकार और अज्ञानी पूर्ण धारणा क्यों मौजूद है। सातवें दशक में पुरुष वर्चस्ववाद की सामाजिक सत्ता और संस्कृति के विरोध में प्रतिष्ठित डायनामाइट आंदोलन को नारीवादी आंदोलन का नाम दिया गया। विपरीत नारीवादी आंदोलन एक राजनीतिक आंदोलन है जो महिलाओं की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक

स्वतंत्रता का पक्षधर है। स्त्री मुक्ति अकेले स्त्री की मुक्ति का प्रश्न नहीं है बल्कि यह संपूर्ण मानवता की मुक्ति की अनिवार्य शर्त है। असल में यह अस्मिता की लड़ाई है। इतिहास ने यह भी सिद्ध कर दिया है कि मध्य जनसंख्या के विद्वानों की क्रांतियाँ सफल नहीं हो सकतीं।

भारतीय राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन के दौर में अपनी जातीय अस्मिता की पहचान और जनता के अधिकार की मांग के साथ-साथ नारी मुक्ति का सपना भी देखा जा रहा था। नव स्वतंत्र भारतीय राष्ट्र ने महिला चर्चों को यह विश्वास भी दिलाया कि बड़े पैमाने पर सदस्यों की प्राप्ति के बाद स्त्री-पुरुष संबंध, लैंगिक श्रम विभाजन, आर्थिक हिंसा का मुद्दा स्वतः ही हल हो जाएगा लेकिन स्वतंत्रता के सिद्धांत के बाद भी स्त्री-मूलक प्रश्न ज्यों के त्यों बने हुए हैं। महिलाओं पर आर्थिक, सामाजिक यौन उत्पीड़न अधिक व्यापक, व्यापक, निरंकुश और सहयोगी रूप से शामिल है। महिला शास्त्रियों को इन सभी उपन्यासों से लड़कर ही अपनी मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करना होगा। निश्चित रूप से प्रारूप से अन्य मुक्तिकामी संप्रदायों से किसी भी रूप में भिन्न नहीं है जो वर्ग, जाति, नस्लीय आधार पर समाज हो रही हिंसा और अस्वाभाविक के प्रति संघर्ष है और एक समतामूलक समाज निर्माण संरचनाएं हैं। नारीवादी चर्चों की वैज्ञानिक रणनीति के रूप में नारी अध्ययन एक प्रचारक अभिप्राय है जो मानव एवं जेंडर संदेश समाज में विश्वास करता है। इस समाज के प्रत्येक तबके के साधक को केंद्र में ज्ञान के प्रति नया दृष्टिकोण विकसित करने के लिए मौलिक है जो सत्यमूलक ज्ञान की रूढ़िबद्धता को उसके वृहद रूप में प्रस्तुत करता है। विशेष रूप से स्त्री विषयक विचारधारा के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक आधार पर अपनी राय रखते हुए जेंडर हेलाइक आधारित समाज के निर्माण और उद्योग हैं। अंतर्विषयक अध्ययन के कारण यह अन्य विषयों के साथ ज्ञानात्मक संबंध भी स्थापित करता है। नारीवाद के प्रति पुस्तक जगत में अंतरिक्ष निर्माण के लिए भी नारीवाद को पढ़ाना अति आवश्यक है। जरूरी नहीं कि उच्च शिक्षा में नारीवाद पढ़ने के बाद लोग नारीवाद को बढ़ावा दें, लेकिन यह संभव हो सकता है कि ज्ञान के नए क्षितिज के रूप में वह अपने बारे में समझ सके।

आम तौर पर स्त्री-विमर्श के लिए इस पर आरोप लगाए जा रहे हैं कि इसी कारण से स्त्री-विमर्श के लिए संस्थानीकरण हुआ है और लोग स्त्री-विमर्श को पाठ्य के रूप में पढ़ने में लगे हैं। बहुत हद तक यह सही भी है लेकिन धीरे-धीरे ही सही स्त्री अध्ययन पारंपरिक ज्ञान की दुनिया में अपना स्थान पाने में सफल हो रही है। इसे प्रारंभ करने योग्य के रूप में भी देखा जा सकता है। या यूँ कहते हैं कि यह ब्राह्मणवादी पितृसत्तात्मक ज्ञान व्यवस्था की मजबूरी भी है कि वह इस प्रचारक को तरजीह दे की सलाह देता है।

**हिन्दी साहित्य स्त्री समस्या –**

हिन्दी साहित्य में स्त्री-विमर्श की शुरुआत छायावाद काल से मानी जाती है। महादेवी वर्मा की माँ वेदना का विभिन्न रूप में दर्शन। उनकी श्रृंखला की कड़िया 'स्त्रीसंविधान का सुन्दर उदाहरण है। जिसमें नारी - स्वर्ग एवं मुक्ति का प्रश्न उठाया गया है। ऐसा साहित्य जिसमें स्त्री जीवन की अनेक संभावनाओं का चित्रण हो स्त्री-विमर्श व्याख्याता है।

प्रेम चंद से लेकर राजेंद्र यादव तक कई पुरुष लेखकों ने नारी समस्या को उकेरा है। लेकिन उस रूप में नहीं जिस रूप में स्वयं महिला लेखिका ने प्रलेख प्रकाशित किया है। हिन्दी कथा - साहित्य में नारी - मुक्ति को लेकर स्त्री - विवेचना की गूंज 1960 ई. पश्चिम में हुआ था. जिसमें चार नाम शामिल हैं - उषा प्रियमवदा, कृष्णा सोबती, मां गुड़िया भंडारी और शिवानी। इन नारी मन की जादुई शक्तियों को प्रभावित किया गया और नारी की दिशा, दुर्बलता, कुंथा आदि का विश्लेषण किया गया।

**हिन्दी पद्य व गद्य में नारी विमर्श –**

समाज के दो मानक स्त्री-पुरुष एक दूसरे के पूरक हैं। किसी एक के अभाव में दूसरे का अनुभव नहीं होता। उसके बाद भी पुरुष समाज ने महिला समाज को अपने समकक्ष के अनुकूल से वोट दिया। यही पूर्वी दृष्टि ने शिक्षित नारियों को आंदोलन करने के लिए मजबूर किया जो आज अवशेष नदी - दृष्टिगोचर के रूप में चर्चा है।

आदिकाल से ही नारियों की दशा एवं सोचनीय थी। राक्षस की दशा को देखने के बाद कहा गया है - जगत के कल्याण के बिना राक्षस की दशा को सुधारने में कोई दुर्लभ बात नहीं है। पक्षी के लिए एक पंख से उड़ना संभव नहीं है।[1] विवेकानंद जी महिला समाज की वास्तविक दशा से चिंचित, देश एवं समाज के मूल्य महिला समाज के अवशेषों के बारे में बताया गया है।

सुशीला टाकभौरे के काव्य संग्रह स्वादिबूंद और मोती और ये तुम भी जानों काफी मशहूर हो रहे हो। विद्रोही कविता में ऑर्केस्ट्रा की आवाज़ सुनाई देती है -

"मां-बाप ने पैदा किया था गंगा

पर्यावरण ने लम्बा बना दिया

मोबाइल रिपोपटी पर

बैसाखियाँ चरमराती हैं।

अधिक लोड से अकुलाकर

विसर्जित मन हुंकारता है

बैसाखियों को तोड़ दूं।"[2]

कामुक कविता स्त्री - जीवन की वास्तविकता का चित्रण कर रही है।

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी गद्यकार एवं कवि रघुवीर सहायजी नारी जीवन के वास्तविक चित्र बनाते हैं, उन्होंने अपनी काव्य में स्वतंत्रता के बाद नारी जीवन की अनेक समस्याओं को विषय बनाया है। जिस भारत में स्त्री वैदिक काल में "यत्र नार्यस्तु पूज्यंते तत्र रमन्ते देवता" कहा गया था आज भी अनेक शोषण का शिकार हो रही है। वह है -

"नारी लड़की है

प्यार की मारी

तन से क्षुदित है

लपक कर झपक कर

अंत में चित्त है।"[3]

प्रस्तुत पंक्ति में कविवर सहाय जी नारी को चुरारी, उसकी नवजात अवस्था का वर्णन है जो अपने अधिकार के लिए लड़कियाँ नहीं है। लेकिन वर्तमान में यह स्थिति बदली हुई नजर आती है। भारत सरकार ने सन् 2001 में महिला आरक्षण वर्ष घोषित किया। अब नारी अपने हरेक अधिकार को लेकर रहेगी। यही युद्ध स्त्री-विमर्श या नारी संप्रदाय के रूप में स्थापित है।

**नारी लेखिका का योगदान –**

हिन्दी कथा साहित्य में नारी विमर्श का ज़ोर रेशम के दशक तक - एक आंदोलन का रूप ले लिया। क्रीड़ा दशक की महिला लेखिका में उल्लेखनीय हैं - ममता कालिया, कृष्णा अग्निहोत्री, चित्रा मुद्गल, माणिक मोहनी, मृदुला गर्ग, मुदुला सिन्हा, मंजुला भगत, मैत्रेयी पुष्पा, मृणाल पाठक, नासिरा शर्मा, दीप्ति खंडेलवाल, कुसुम रेखा, इंदु जैन, जैन जैन, प्रभाखेतन, सुधा शर्मा, क्षमा शर्मा, प्रेरणा वर्मा, नमिता सिंह, अल का सरावगी, जया जादवानी, मुक्ता रमणिका गुम्पता आदि ये सभी निबंध ने नारी मन की गहराईयों, अंतद्रवंड्वों और अनेकों का अंकन संजिदगी से किया है।

स्त्री की दशाओं पर अनेक समाज सुधारकों ने चिंता व्यक्त की और यथा संभव दूर करने का प्रयास भी किया। जिससे नारी की स्थिति में परिवर्तन हुआ। ब्रम्ह समाज, आर्य समाज, थियोसोफिकल सोयति, रामकृष्ण मिशन और कई सरकारी संतों ने नारी शिक्षा पर ज़ोर दिया , जिसके सकारात्मक परिणाम आये। विंद वीथिका के शब्दों में - "नारियों के लिए सबसे बड़ा अभिशाप उनकी शिक्षा थी और उनके तंत्रतंत्र का प्रमुख कारण उनकी आर्थिक स्वतंत्रता का अभाव था। आज स्थिति बदल गयी है. आज हर क्षेत्र का द्वार लड़कियों के लिए खुला है। वे हर जगह प्रवेश पाते हैं - जमीन से आसमां तक - पृथ्वी से चांद तक (काल्पनिक चांवला, सुनीता विलियम) उनकी पहुंच है।"[4]

आज स्त्री समाज सभी क्षेत्रों में अपनी भागीदारी निभा रही है। राजनीतिक हो या सामाजिक, आर्थिक हो या सांस्कृतिक उसके बाद भी यह लड़ाई क्यों? लेकिन सवाल तो यह है कि वह पुरुष की स्वतंत्रता चाहता है। इसलिए पितृसत्ता का विरोध करमप्रिक बेडाइस को तोड़ना चाहता है।

बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशक में स्त्रीवादी विचार पठने का सुअवसर मिला। भूमंडलीकरण ने अपने विभाग में सभी वर्गों के साथ दुष्टों को घर से बाहर का रास्ता दिखाया। परिणामस्वरूप महिला अपने उष्णकटिबंधीय क्षेत्र में ठोस अनुमति की और स्वलंबन की दिशा में तीव्र प्रयास भी सामने आयी।

स्त्री - वांछनीय स्वाधीनता के बाद का संकल्प है। महिलाओं के प्रति होने वाले शोषण के विरुद्ध संघर्ष है। डॉ. संदीप राणाभिरकर के शब्दों में - "स्त्री-विमर्श स्त्री के स्वयं की स्थिति के बारे में विचार और निर्णय लेने का विचार है। सौतेले से होते आये शोषण और दमन के प्रति स्त्री चेतन ने ही स्त्री-विमर्श को जन्म दिया है।"[5]

पितृसत्तात्मक व्यवस्था ने स्त्री समाज को हमेशा के लिए अंधकारमय जीवन जीने के लिए मजबूर कर दिया है। लेकिन आज की नारी चेतनशील है जिसे अच्छे - बुरे का ज्ञान है। अब इस व्यवस्था का फ़ेक्चर कर क्लीनएंड माइटिकल लाइफ़ लाइफ़ शुरू हो गया है। नारी अनुभव को लेकर अपने - अपने समय पर कई विद्वानों ने चिंता व्यक्त की है। तुलसीदास जी ने "ढोल गवार, शूद्र, पशु, नारी-सकल ताड़ना के अधिकारी" 'नारी-नारी को प्रताड़ना के पात्र बताया है तो मैथलीशरण गुप्त जी ने' "अबला जीवन हाय यही कहानी, आंचल में है दूध और आंखों में पानी" 'नारी की स्थिति पर चिंता' बताई गई है। प्रसाद ने "नारी तुम सिर्फ श्रद्धा हो" कहा है तोक्सपियर ने "दुर्बलता प्रेमिका का नाम ही नारी है" आदि नाटकीय नारी अनुभव को बताया है।

अब स्थिति कुछ बदली हुई नजर आती है। क्योंकि साढ़े सातवीं सदी से पहले तक केवल पुरुष लेखक का अधिकार था, महिला लेखन को काउच लेखक की खलनायकी उड़ाया गया था। लेकिन अब स्त्री - चर्चा का डंका बज रहा है क्योंकि क्सक्सक्सक्स सदी तक आते-आते स्त्री-शास्त्र की दवा सी आ गयी। इसके बाद उनकी भी प्रसिद्ध लेखिका सीमन डी बाउर का कथन है कि महिला समाज में पहचान होती है - "स्त्री की स्थिति संबद्धता की होती है।" महिला युगल से एकजुट हो गई है और अगर उसे कुछ स्वतंत्रता हासिल करनी है तो बस इतना ही है कि महिला को अपनी सुविधा के लिए एक साथी की जरूरत है। यह त्रासदी उस व्यक्ति का हिस्सा है, जिसे आधी आबादी कहा जाता है।"[6]

नारी मुक्ति से जुड़े कई प्रश्न, उन पुरातात्विक से जुड़े सामाजिक, पारिवारिक आर्थिक बेबसी और उनसे जुड़ी नारी की मन: स्थिति का चित्रण कई टुकड़ों पर हुआ है। "सातवें दशक और उसके संघर्ष के सबसे ऐतिहासिक इतिहासकारों में से एक महिला का अपना हुआ इतिहास है। नगर एवं महानगरों में शिक्षित एवं नवचेतना युक्त शौचालय का एक ऐसा वर्ग तैयार किया गया था जो समाज के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी कार्य क्षमता प्रमाणित करने के लिए उत्सुक था।"[7]

हिन्दी कथा साहित्य ने अपने-अपने लेखन में नारी मन की अनेक समस्याओं को विषय बनाया है। अमृता मत के रेकी टिकट, कृष्णा सोबती - सहेलियां मरजानी, मॅडोल भंडारी - आपका बंटी, चित्रा मुद्गल - आबां और एक जमीन अपनी, ममता कालिया - एबन, मृदुला गर्ग - गुलाब, मैत्रेयी पुष्पा - चक अल एवंमा दोगड़ी, प्रभाखान के छिन्नमस्ता, पद्मा सचदेव के अब न गई देहरी, कुंदीसेठ का तत्सम, मेहरून्निसा परवेज़ का पलाश, शशि प्रभा शास्त्री की सीढ़ियाँ, कुसुम क्षेत्र के अपनी - अपनी यात्रा, शैलेश मटियानी की बावन नदी का संगम, उषा प्रियमवदा के पचपन खम्बे, लाल दिवार, दीप्ति खण्डेलवाल की प्रतिध्वनियाँ आदि में नदी का संघर्ष देखा जा सकता है। अन्य ज्योति किरण के शब्दों में - "इस समाज में जब स्त्री अपनी समझ और काबलियत स्पष्ट रूप से करती है तब वह कुलच्छनी मणि जाती है, जब वह स्वयं विवेक से काम करता है तब प्रतिबंधहीन समझ मिलती है। अपनी छुट्टी के लिए, अरमानों के लिए जब वह कर्मचारियों के साथ लड़ती हैं और गैर-समझौतावादी बन जाती है, तब परिवार और समाज के लिए वह चुनौती बन जाती है।"[8]

पता है हिंदी स्त्री विमर्श के नए आयाम की तलाश

हिंदी में स्त्री-विमर्श, अनुपातिक पहलू या वैयक्तिक विश्वास तक ही सीमित नहीं है। उनके और भी कुछ आयाम हैं और इन आयामों को भी हमारे आलोचकों द्वारा खोजा जाना चाहिए, न कि केवल चंद क्षेत्रों के आधार पर एक विशेष अनुभव में रहने की। कला साहित्य के हर असंबद्ध संघर्ष के पीछे अपने समय और समाज के वाद्ययंत्रों को भी ध्यान में रखना है। यहाँ तक कि महिला की स्थिति को निर्धारित करने वाले हॉस्टल में आए मित्रता को भी लक्ष्य निर्धारण करना है।

16 दिसंबर की घटना के बाद आने वाली वर्मा समिति की रिपोर्ट ऐसे ही कार्टून का परिणाम है। जहां तक हिंदुस्तान में संस्कृति को बदलने की लड़ाई शुरू होने की बात है तो वह उसी दिन से शुरू हो गई थी जिस दिन पहली महिला ने अपने अधिकार की मांग की थी त्रिकोमाली संस्कृति के अनुरूप स्थिरता सांस्कृतिक संस्कृति की शुरुआत की होगी। हम नहीं जानते कि वह महिला कौन थी या उसकी मांग क्या थी! उनकी पहली लड़ाई अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को लेकर ही रही हो। 16 दिसंबर की घटना के बाद पुनरुत्थान वाला सांस्कृतिक सांस्कृतिक विचरण के विरुद्ध संघर्षों के बीच अंतर्राष्ट्रीय इतिहास का एक बड़ा अध्याय है और इस अध्याय में इस रूप में लिखा गया है कि जब उसका एक मजबूत आधार निर्मित हो गया था। यहां के पुरुषवादी सत्ता - विद्रूपता को देखने के लिए हजारों नाम जा सकते हैं और उनके विरोध में विद्रोह वाले छोटे से छोटे स्वर को भी सांस्कृतिक विविधता का प्रतिरोध माना जाना चाहिए।

**उपसंहार -**

महिला लेखिका की लड़ाई सहयोगी जयोति किरण की विचारधारा गद्यांश में देखी जा सकती है। मूल रूप से निष्कर्ष में कहा गया है कि नारी आदिकाल से ही पीड़ित एवं शोषित रही है पुरुष प्रधान समाज में मर्यादा के आधार पर सदा उसे कायम रखना है। कभी घर का प्रतीक तो कभी देवी के प्रतीक चार दीवारों के स्थान पर ही रखे जाते थे। परंपरावादी पितृसत्तात्मक बेदारी को लंघने की लड़ाई है स्त्री - चर्चा।

**उदाहरण सूची –**

1. देखें : मार्च 2013 - पृष्ठ 20
2. वहीं - पृष्ठ 29
3. पंचशील शोध - समीक्षा - पृष्ठ 82
4. देखें : मार्च 2013 - पृष्ठ 27
5. पंचशील शोध - समीक्षा - पृष्ठ 87
6. देखें : मार्च 2013 - पृष्ठ 24
7. देखें : मार्च 2011 - पृष्ठ 25
8. पंचशील शोध - समीक्षा - पृष्ठ 61

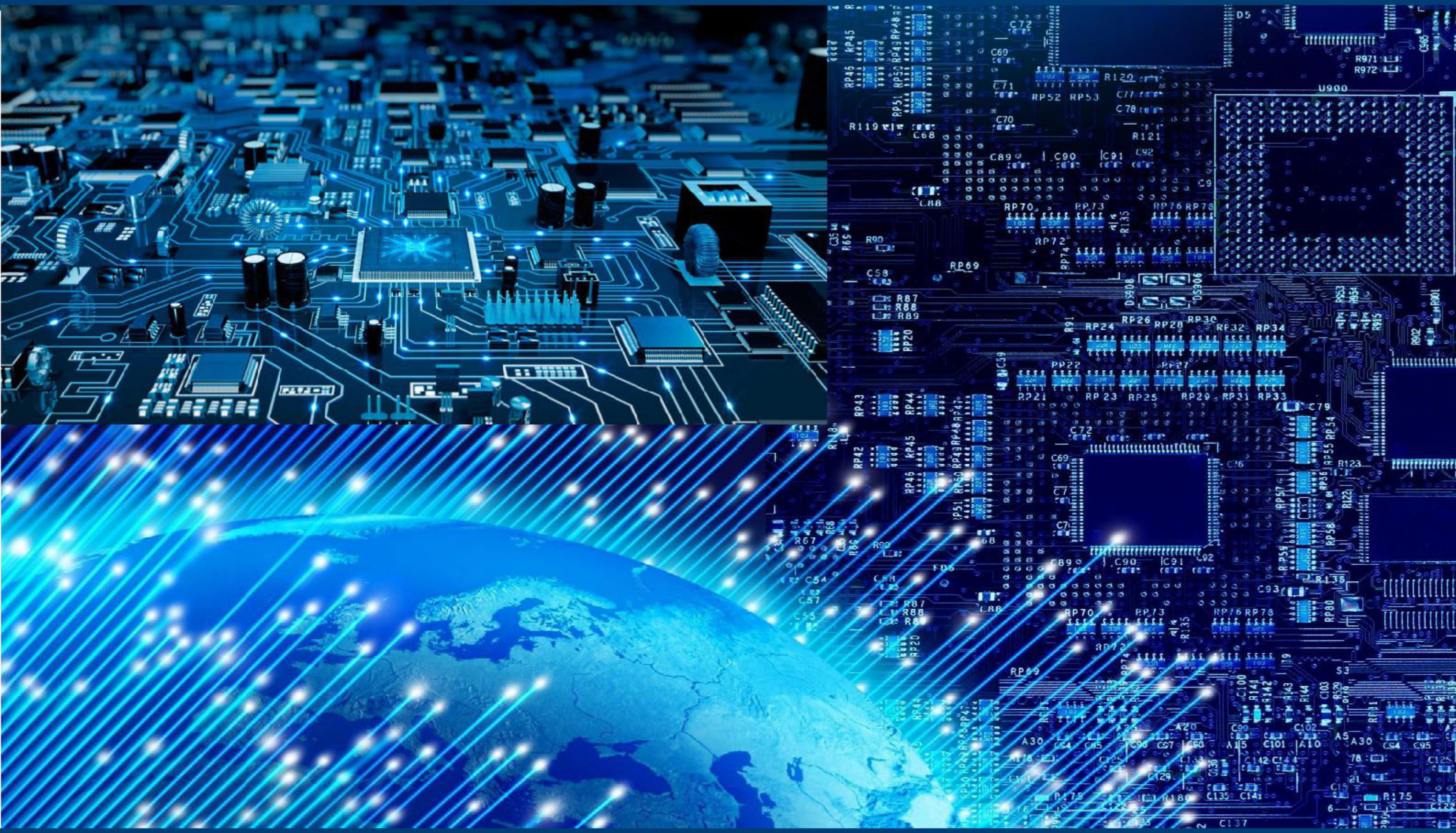


INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| Mobile No: +91-9940572462 | Whatsapp: +91-9940572462 | ijarasem@gmail.com |

www.ijarasem.com